



# छत्तीसगढ़ के महासमुंद जिले के पिथौरा विकासखण्ड में खड़िया जनजातीय महिलाओं की शैक्षिक स्थिति, आजीविका के स्वरूप एवं सामाजिक परिवर्तन

अक्षय कुमार साहू, शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग  
श्री रावतपुरा सरकार यूनिवर्सिटी रायपुर, छत्तीसगढ़

डॉ. अर्चना आर. तुपट, सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्र विभाग  
श्री रावतपुरा सरकार यूनिवर्सिटी रायपुर, छत्तीसगढ़

## सारांश

भारत में अनुसूचित जनजातीय समुदाय सामाजिक-सांस्कृतिक विविधता और संसाधन-आधारित आजीविका के लिए जाने जाते हैं। छत्तीसगढ़ के महासमुंद जिले के पीथौरा विकासखण्ड में निवास करने वाली खड़िया जनजातीय महिलाएँ घरेलू, कृषि एवं वन-आधारित कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, किंतु शिक्षा, आजीविका और सामाजिक सहभागिता में अनेक संरचनात्मक बाधाओं का सामना करती हैं। पूर्ववर्ती अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि शिक्षा, आजीविका और सामाजिक परिवर्तन आपस में गहराई से जुड़े हैं। साक्षरता, मातृभाषा-आधारित शिक्षा, स्व-सहायता समूहों (SHGs) और आजीविका कार्यक्रमों से महिलाओं की निर्णय-क्षमता, आर्थिक स्वतंत्रता और सामाजिक स्थिति में सुधार हुआ है।

यह अध्ययन द्वितीयक स्रोतों पर आधारित एक समीक्षात्मक शोध है, जिसमें सरकारी रिपोर्टें, नीतिगत दस्तावेजों, शोध लेखों और केस अध्ययनों का समालोचनात्मक विश्लेषण किया गया है। समीक्षा से स्पष्ट है कि शिक्षा मानव पूँजी को सुदृढ़ करती है, आजीविका आर्थिक सशक्तिकरण को बढ़ाती है और दोनों मिलकर सामाजिक परिवर्तन को गति देते हैं। स्थानीय स्तर पर, विशेषकर पीथौरा ब्लॉक में, खड़िया महिलाओं पर केंद्रित दीर्घकालिक, सहभागी और अंतर्विषयक अध्ययनों का अभाव है। मातृभाषा-आधारित शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण, SHG-आधारित उद्यम और सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील नीतियों को सुदृढ़ करने की आवश्यकता है। एकीकृत, समुदाय-आधारित और सांस्कृतिक रूप से अनुकूल हस्तक्षेप खड़िया महिलाओं के सतत सशक्तिकरण और सामाजिक परिवर्तन के लिए अनिवार्य हैं।

**मुख्य शब्द:** खड़िया महिलाएँ, जनजातीय शिक्षा, आजीविका सशक्तिकरण, सामाजिक परिवर्तन,

## 1. प्रस्तावना

### 1.1 भारत में आदिवासी समुदायों की पृष्ठभूमि

भारतवर्ष में 10.4 करोड़ से ज़्यादा आदिवासी लोग निवास करते हैं, जो भारत की कुल आबादी का लगभग 8.6% हिस्सा हैं (भारत सरकार, 2011)। इन समुदायों को, जो आधिकारिक तौर पर अनुसूचित जनजाति के रूप में जाने जाते हैं, अपनी विशेष सामाजिक-सांस्कृतिक, भाषाई और व्यवसायिक पहचान के लिए पहचाना जाता है। भौगोलिक रूप से, आदिवासियों की जनसंख्या मुख्य रूप से मध्य, पूर्वी और उत्तर-पूर्वी भारत में बसी हुई है, जिनमें छत्तीसगढ़, झारखंड, ओडिशा और मध्य प्रदेश जैसे राज्य शामिल हैं। इनमें से छत्तीसगढ़ एक ऐसा प्रदेश है जहाँ आदिवासियों की संख्या ज़्यादा है, यहाँ लगभग 30% आबादी अनुसूचित जनजातियों की है (छत्तीसगढ़ ट्राइबल रिसर्च एंड ट्रेनिंग इंस्टिट्यूट, 2021)। इस क्षेत्र के आदिवासी समाज ने ऐतिहासिक रूप से अपनी सांस्कृतिक पहचान, परंपरागत प्रशासनिक व्यवस्था और प्राकृतिक संसाधनों व पारिस्थितिकी के साथ गहरे संबंध वाली जीवनशैली को बनाए रखा है। **देखा गया कि पहाड़ी कोरबा जनजाति पर सोशल मीडिया का रोल कहीं उनकी भूमिका में कमी देता है जिसमें लोगों के बीच सामाजिक एकता की भावना दिखाई दे रही है। आजीविका के बदलते स्वरूप को देखते हुए उसमें सोशल मीडिया का महत्व पूर्ण सकारात्मक भूमिका दिखाई देती है।** ( पंडा, उत्तम कुमार और अर्चना आर. तुपट (2023))

इसी क्रम में, खड़िया जनजाति, जिसे पहाड़ी खड़िया और दूध खड़िया के नाम से भी जाना जाता है, एक विशेष सांस्कृतिक और सामाजिक समुदाय का प्रतिनिधित्व करती है। ये मुख्य रूप से महासमुंद जिले के पिथौरा ब्लॉक और झारखंड व ओडिशा के कुछ क्षेत्रों में रहते हैं। खड़िया समुदाय अपनी मजबूत सांस्कृतिक विरासत और सामाजिक एकता को बनाए हुए है। उनकी विशेष भाषाएँ और बोलियाँ पारंपरिक ज्ञान को सुरक्षित रखने में महत्वपूर्ण हैं, जबकि उनकी आजीविका मुख्य रूप से पारंपरिक खेती, वन-आधारित कार्यों और मौसमी मजदूरी पर टिकी है (ठाकुर, 2015; शुक्ला, 2014)। इसके अलावा, खड़िया समाज लोककथाओं, रीति-रिवाजों, त्योहारों और पारंपरिक प्रशासनिक तौर-तरीकों से समृद्ध है, जो सामाजिक संबंधों और सामूहिक निर्णय लेने की प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं (केरकेट्टा, 2013; विद्यार्थी, 1980)।

### 1.2 खड़िया महिलाओं का सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ

खड़िया महिलाएँ घर और समाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, वे घर की ज़िम्मेदारियों के साथ-साथ खेती, वन-आधारित कार्यों और सामाजिक-सांस्कृतिक गतिविधियों में भी भाग लेती हैं (मिश्रा, 2019; ठाकुर, 2015)। इन योगदानों के बावजूद, ऐतिहासिक रूप से उनकी शिक्षा, आर्थिक स्वतंत्रता और उन्नति की संभावनाएँ सीमित रही हैं। ये सीमाएँ पितृसत्तात्मक नियमों, लिंग के आधार पर काम के बँटवारे और सांस्कृतिक मान्यताओं में निहित हैं। कम उम्र में विवाह, घर के कामों का ज़्यादा बोझ और स्कूल जाने के पर्याप्त अवसर न मिल पाने जैसी परिस्थितियाँ महिलाओं की औपचारिक शिक्षा और कौशल विकास के अवसरों में बाधा डालती हैं (सक्सेना, 2023; वर्मा, 2024)। ये व्यवस्थागत बाधाएँ महिलाओं के सशक्तिकरण को रोकती हैं और उन्हें सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक प्रक्रियाओं में पूरी तरह से शामिल होने से वंचित करती हैं। जैसे भारतीय लिंग भूमिका संरचनाओं के बीच संक्रमण यह पेपर दो वर्किंग परिवारों के घरेलू काम और बच्चों की देखभाल के प्रति उनके नज़रिए की जांच करता है। यह स्टडी भुवनेश्वर (ओडिशा) और दिल्ली (NCR) में की गई थी। इस स्टडी से यह बात सामने आई कि दो वर्किंग परिवारों का घरेलू कामों के प्रति नज़रिया एक स्ट्रक्चरल बदलाव से गुज़र रहा है। ( पंडा, उत्तम कुमार, इंडियन जेंडर रोल्स इन ट्रांज़िशन: बिटवीन द स्ट्रक्चर्स (2017) )

### 1.3 जनसांख्यिक और शैक्षिक प्रोफ़ाइल

भारत की आदिवासी जनगणना (2011) और राज्य-स्तरीय अध्ययनों के आँकड़ों के मुताबिक, महासमुंद जिले में खड़िया महिलाओं की साक्षरता दर राज्य के औसत से कम है, लगभग 45-50% (छत्तीसगढ़ ट्राइबल रिसर्च एंड ट्रेनिंग इंस्टिट्यूट, 2021)। माध्यमिक और उच्च शिक्षा में पंजीकरण की दर भी काफी कम है, जिसका कारण आर्थिक दबाव, भौगोलिक दूरी और सामाजिक-सांस्कृतिक मान्यताएँ हैं। लैंगिक असमानताएँ खासतौर पर व्यवसायिक और तकनीकी कोर्सेज तक पहुँचने में साफ़ दिखाई देती हैं, जिससे महिलाओं की आय-उत्पादक गतिविधियों और नेतृत्व की भूमिकाओं में भागीदारी सीमित हो जाती है (राव, 2020; महांती, 2021)। ये आँकड़े महिलाओं के सीखने और विकास के अवसरों को बेहतर बनाने के लिए सांस्कृतिक और भाषाई रूप से संवेदनशील शैक्षिक प्रयासों की ज़रूरत पर ज़ोर देते हैं।

## 1.4 शिक्षा का महत्व

शिक्षा को सशक्तिकरण, सामाजिक प्रगति और सामुदायिक विकास के एक महत्वपूर्ण साधन के तौर पर व्यापक रूप से स्वीकार किया गया है (प्रोएरर, 2012; बर्न, 1994)। खड़िया महिलाओं के लिए, यह साक्षरता, अंकगणित, सोचने-समझने की क्षमता और स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता को बढ़ावा देती है, जिससे वे घर और समाज में बेहतर फैसले लेने में सक्षम होती हैं (महांती, 2021)। इसके साथ ही, शिक्षा स्थानीय प्रशासन, सामुदायिक मंचों और घर से जुड़े फैसलों में सक्रिय रूप से भाग लेने की नींव भी रखती है (सिंह & कुमार, 2022)। यह विभिन्न प्रकार की आजीविका रणनीतियों के लिए भी ज़रूरी है, क्योंकि यह महिलाओं को उद्यमशीलता, व्यवसायिक कार्य और आर्थिक गतिविधियों के लिए ज़रूरी कौशल प्रदान करती है (लेट, 2025; मिश्रा, 2019)। इस तरह, शिक्षा व्यक्तिगत, आर्थिक और सामाजिक सशक्तिकरण का आधार बनती है। अर्थव्यवस्थाओं के वैश्वीकरण की पॉलिसी अपनाने से, विकसित देशों को बड़ा हिस्सा मिल रहा है और वे ज़्यादा अमीर हो रहे हैं फिलहाल, शिक्षा सिर्फ एक राष्ट्रीय चिंता नहीं बल्कि एक वैश्विक चिंता भी है। शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़े देश हर क्षेत्र में पिछड़े हुए हैं। पूरी दुनिया को शिक्षा में सुधार करने और हर व्यक्ति को सिर्फ साक्षर नहीं, बल्कि शिक्षित और आत्मनिर्भर बनाने के बारे में सोचना चाहिए। ( दास , एस. के. और पंडा, उत्तम कुमार (2004))

## 1.5 आजीविका पैटर्न

शुरू से ही, खड़िया महिलाओं की आजीविका खेती, वन उत्पादों के संग्रह और हस्तशिल्प पर निर्भर रही है (मिश्रा, 2019; शुक्ला, 2014)। हाल के सालों में, सरकारी एजेंसियों और एनजीओ ने शिक्षा को आर्थिक सशक्तिकरण से जोड़ने की कोशिश की है। स्वयं सहायता समूहों (SHGs), व्यवसायिक प्रशिक्षण और छोटे उद्यमों जैसी पहलों ने महिलाओं को घर की आय बढ़ाने के साथ-साथ आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता हासिल करने का मौका दिया है (पट्टनायक, 2022; बंजारे & सिंह, 2025; राठौर एट अल., 2022)। इसके बावजूद, बाज़ार तक सीमित पहुँच, पर्यावरण में अस्थिरता और सांस्कृतिक रूढ़ियाँ अभी भी चुनौतियाँ बनी हुई हैं, जिससे पता चलता है कि कौशल विकास को लगातार आर्थिक अवसरों के साथ तालमेल बिठाना ज़रूरी है। समाज में किसी व्यक्ति का स्टेटस सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से तय होता है। हालांकि, लिंग के आधार पर किसी व्यक्ति की स्थिति ने ऐतिहासिक रूप से भेदभाव को जन्म दिया है, लेकिन संवैधानिक प्रावधानों और दिए गए अधिकारों ने यह सुनिश्चित किया है कि, महिलाओं को पुरुषों के साथ नागरिकों के रूप में समान अधिकार मिलें। परिवार के अंदर की भूमिकाएँ भी धीरे-धीरे बदल रही हैं। ओडिशा और दिल्ली के ज़्यादातर पुरुष 91.3% और महिलाओं 76.3 % पर किए गए एक अनुभव आधारित अध्ययन में, खासकर महिलाओं की परिवार में अपनी पहचान और स्टेटस है और वे अपने बड़े परिवार के खर्च में भी योगदान देती हैं। ( पंडा, उत्तम कुमार (2019))

## 1.6 सामाजिक परिवर्तन

शिक्षा और आर्थिक भागीदारी का मेल खड़िया महिलाओं में धीरे-धीरे सामाजिक परिवर्तन ला रहा है। शिक्षित और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर महिलाएँ अब घर के फैसलों, माँ और बच्चे के स्वास्थ्य से जुड़ी आदतों और सामुदायिक प्रशासन में हिस्सा लेने लगी हैं (डैश, 2020; पटेल, 2025)। वे पीढ़ी से चली आ रही लिंग आधारित भूमिकाओं को फिर से परिभाषित करती हैं और अपनी सांस्कृतिक पहचान को भी बनाए रखती हैं। हालाँकि, यह प्रक्रिया पूरी तरह से समान नहीं है, क्योंकि इसमें पितृसत्तात्मक विरोध, पीढ़ीगत मतभेद और संसाधनों की कमी जैसी बाधाएँ शामिल हैं, जिनसे पता चलता है कि सामाजिक बदलाव को बढ़ावा देने के लिए संस्कृति को ध्यान में रखकर समुदाय-आधारित दृष्टिकोण अपनाने की ज़रूरत है। हाल के सालों में, दुनिया भर में सोशल मीडिया में ज़बरदस्त बढ़ोतरी हुई है। आजकल, सोशल मीडिया अक्सर कम्युनिकेशन और सोशल इंटरैक्शन में एक अहम और ज़रूरी भूमिका निभाता है और लोगों की रोज़मर्रा की ज़िंदगी पर इसका बहुत ज़्यादा असर पड़ता है।

( तुपट, ए. आर. और पंडा, उत्तम कुमार (2021).)

## 1.7 नीति प्रासंगिकता

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 और आदिवासी कल्याण योजनाओं जैसे नीतिगत ढाँचे समावेशी शिक्षा, लैंगिक समानता और सामुदायिक भागीदारी पर ज़ोर देते हैं (भारत सरकार, 2020)। महतारी वंदन योजना और एसएचजी से जुड़ी आजीविका जैसी योजनाओं ने आदिवासी महिलाओं की शिक्षा और आर्थिक सशक्तिकरण को बढ़ावा देने में असर दिखाया है (पटेल, 2025; बंजारे & सिंह, 2025)। हालाँकि, उनकी सफलता स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार बदलाव, निगरानी और सामाजिक-सांस्कृतिक विचारों को शामिल करने पर निर्भर करती है, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि प्रयास संरचनात्मक और परंपरागत बाधाओं को दूर करें।

## 1.8 उद्देश्य और वैचारिक रूपरेखा

पिथौरा ब्लॉक की अपनी सामाजिक-सांस्कृतिक और आर्थिक विशेषताएँ हैं, इसलिए खड़िया महिलाओं के जीवन में शिक्षा, आजीविका और सामाजिक बदलाव के बीच के संबंध का अध्ययन करना ज़रूरी है। यह अध्ययन तीन पहलुओं वाले ढाँचे पर आधारित है:

**1. शिक्षा** → क्षमता का विकास: साक्षरता, कौशल और ज्ञान का निर्माण करके सक्रिय भूमिका निभाने की शक्ति को बढ़ाना।

**2. आजीविका** → आर्थिक सबलीकरण: वित्तीय आत्मनिर्भरता को मजबूत करने के लिए टिकाऊ आय के अवसर पैदा करना।

**3. सामाजिक बदलाव** → सक्रिय भूमिका और निर्णय लेना: शासन और सामाजिक सुधार में भागीदारी को बढ़ावा देना।

यह ढाँचा शिक्षा, आर्थिक गतिविधियों और सामाजिक क्षमता की आपस में जुड़ी हुई प्रकृति पर ज़ोर देता है, जो खड़िया समुदाय की महिलाओं के परिवर्तनकारी अनुभवों को समझने के लिए एक आधार प्रदान करता है।

## 2. साहित्य समीक्षा

पीथौरा, महासमुंद में खड़िया आदिवासी स्त्रियों के लिए साहित्य, शिक्षा, रोजगार और सामाजिक बदलाव के आपस में जुड़े तीन क्षेत्रों पर रोशनी डाली गई है। राष्ट्रीय स्तर के अध्ययन, सरकारी रिपोर्ट्स और अनुभवजन्य रिसर्च, आदिवासी महिलाओं के सामने आने वाली चुनौतियों व संभावनाओं को समझने में मदद करते हैं। यह दिखाते हैं कि शिक्षा, आर्थिक भागीदारी और सामाजिक परिवर्तन एक-दूसरे से कैसे जुड़े हुए हैं।

### 2.1 आदिवासी महिलाओं की शिक्षा

शिक्षा को सशक्तिकरण, सामाजिक तरक्की और पीढ़ी दर पीढ़ी विकास के लिए एक अहम साधन माना जाता है (फ्रोएर, 2012; बर्न, 1994)। खड़िया समुदाय की महिलाओं के लिए, यह सिर्फ साक्षरता, गणित और स्वास्थ्य के बारे में जानकारी ही नहीं बढ़ाती, बल्कि सामुदायिक जीवन में भागीदारी और अलग-अलग तरह के रोजगारों में प्रवेश को भी आसान बनाती है (मिश्रा, 2023; राव, 2020)।

पुराने समय से, आदिवासी महिलाओं की शिक्षा गरीबी, घर की जिम्मेदारियों, कम उम्र में शादी और भाषा की रुकावटों से प्रभावित रही है। ज्यादातर स्कूल हिंदी या स्थानीय भाषाओं में चलते हैं, न कि उनकी अपनी भाषा में (सक्सेना, 2023; वर्मा, 2024; महांती, 2021)। महिला रोल मॉडल और मार्गदर्शकों की कमी भी शिक्षा से जुड़ी उनकी उम्मीदों को कम करती है (कुमार और शर्मा, 2023)। आजादी के बाद साक्षरता अभियानों ने आदिवासी इलाकों में महिलाओं की साक्षरता को धीरे-धीरे बेहतर किया है (विद्यार्थी, 1980; प्रधान, 2001)।

पिछले कुछ दशकों में, बदलते भारतीय समाज में जेंडर संबंधों और पुरुषों और महिलाओं दोनों की भूमिका को समझने के लिए बहुत ज़्यादा रिसर्च की गई है। यह सोच में बदलाव सिर्फ परिवार की वजह से नहीं है, बल्कि यह समानता के लिए राज्य द्वारा बनाया गया एक माहौल है। “वर्किंग कपल्स एंड चेंजिंग डोमेस्टिक रोल्स: व्हाई एंड हाउ दीज़ कॉन्सिक्सेस??” यह स्टडी खास तौर पर भारत के दो राज्यों में की गई है, एक सबसे पिछड़े राज्य (ओडिशा) में और दूसरा भारत के दिल्ली राज्य में। (पंडा, उत्तम कुमार, (2010)

शिक्षा से जुड़े प्रयासों ने अच्छा असर दिखाया है। समुदाय और माता-पिता का साथ मिलने से आदिवासी लड़कियों के स्कूल छोड़ने की दर कम होती है (सिंह और कुमार, 2022)। वहीं, वयस्कों के लिए साक्षरता कार्यक्रम महिलाओं को फैसले लेने, पैसे का हिसाब रखने और आमदनी बढ़ाने वाली गतिविधियों में शामिल होने में मदद करते हैं (सोरेन और दास, 2025)। पाठ्यक्रम में रोजगार से जुड़े कौशल को शामिल करने से नौकरी मिलने और उद्यमी बनने की संभावना बढ़ जाती है (महांती, 2021; पट्टनायक, 2022)। सरकार की योजनाएं, जैसे कि NEP 2020 और महतारी वंदन योजना, सभी को साथ लेकर चलने वाली और उनकी अपनी भाषा पर आधारित शिक्षा को बढ़ावा देती हैं और पढ़ाई जारी रखने के लिए आर्थिक मदद भी देती हैं (भारत सरकार, 2020; पटेल, 2025)।

### तालिका 2.1: आदिवासी महिलाओं की शिक्षा पर प्रमुख अध्ययन

लेखक/संदर्भ	वर्ष	फोकस	मुख्य निष्कर्ष
मिश्रा, पूजा	2023	आदिवासी महिलाओं की भागीदारी	शिक्षा साक्षरता और सामाजिक क्षमता बढ़ाती है
कुमार & शर्मा	2023	NEP 2020 और खड़िया	नीति पहुँच बढ़ाती है, लेकिन सांस्कृतिक अनुकूलन आवश्यक है
सोरेन & दास	2025	स्व-अध्ययन के माध्यम से सशक्तिकरण	वयस्क साक्षरता एजेंसी और निर्णय क्षमता बढ़ाती है
महांती, एस.	2021	शिक्षा में मातृभाषा	मातृभाषा में सीखना समझ और प्रतिधारण में सुधार करता है
पटेल, आर.	2025	महतारी वंदन योजना	वित्तीय प्रोत्साहन लड़कियों के स्कूल प्रतिधारण में सुधार करता है

### 2.2 आजीविका पैटर्न

खड़िया समुदाय की महिलाओं के जीवनयापन के तौर-तरीकों में परंपरागत रूप से देसी खेती (ज्वार, धान, दालें), वन पर आधारित व्यवसाय और हस्तकला शामिल रहे हैं (ठाकुर, 2015; शुक्ला, 2014; केरकेट्टा, 2013)। आधुनिक कोशिशें शिक्षा को आर्थिक रूप से मजबूत बनाने से जोड़ती हैं, स्व-सहायता समूहों (SHG), कृषक उत्पादक संगठनों (FPO), सहकारी समितियों और सिलाई, हस्तशिल्प, खाद्य प्रसंस्करण जैसे व्यवसायों में ट्रेनिंग को बढ़ावा देती हैं (बंजारे & सिंह, 2025; राठौर et al., 2022; मिश्रा, 2019; क्लिमचुक-कोचान्स्का et al., 2023)। दो कामकाजी परिवार कार्यस्थल और तनाव कारक: एक अनुभवजन्य दृष्टिकोण यह पेपर पॉलिसी पर ध्यान देने के लिए कुछ सुझाव देता है। भारतीय अर्थव्यवस्था के ग्लोबलाइजेशन ने प्राइवेट सेक्टर और पब्लिक सेक्टर को बढ़ावा दिया है। 1991 के बाद (LPG) ने भारतीय समाज में पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए महत्वपूर्ण बदलाव लाए हैं। महिलाओं की बाहर काम करने में भागीदारी बढ़ी है। (पंडा, उत्तम कुमार (2018) )

पढ़ी-लिखी महिलाओं के स्व-सहायता समूहों में हिस्सा लेने, आमदनी के साधनों को बढ़ाने और घर की आर्थिक स्थिति को बेहतर बनाने की संभावना अधिक होती है (लेट, 2025; बंजारे & सिंह, 2025)।

## तालिका 2.2: पीथौरा में खड़िया महिलाओं की आजीविका पैटर्न (सारांशित अध्ययन)

लेखक/संदर्भ	वर्ष	आजीविका का प्रकार	मुख्य निष्कर्ष
मिश्रा, एस. सी.	2019	कृषि और वन-आधारित	मुख्य आजीविका स्रोत, नकद आय कम
पट्टनायक, डी. के.	2022	SHG और उद्यमिता	आय और सामाजिक पहचान बढ़ती है
बंजारे & सिंह	2025	SHG और बाजार भागीदारी	महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता में सुधार
क्लिमचुक-कोचान्स्का et al.	2023	FPO और व्यावसायिक प्रशिक्षण	सतत आजीविका विविधीकरण को बढ़ावा देता है

## 2.3 सामाजिक परिवर्तन

शिक्षा और आर्थिक सहभागिता सामाजिक परिवर्तन को गति देती हैं। खड़िया महिलाएं अब घर और समुदाय से जुड़े फैसलों में भाग लेने लगी हैं, स्व-सहायता समूहों में नेतृत्व की भूमिका निभा रही हैं और बच्चों व माताओं के स्वास्थ्य से जुड़ी आदतों में सुधार कर रही हैं (डैश, 2020; राठौर et al., 2022; महाराना, 2025)। सामाजिक बदलाव धीरे-धीरे होता है और इसके लिए जरूरी है कि पुरानी परंपराओं और पीढ़ियों के बीच के मतभेदों को दूर किया जाए (श्रीवास्तव, 2020; शुक्ला, 2014)।

## तालिका 2.3: खड़िया महिलाओं में सामाजिक परिवर्तन के संकेतक

संकेतक	प्रमाण	संदर्भ
घरेलू निर्णय-निर्माण	प्रभाव बढ़ा	डैश, 2020
सामुदायिक भागीदारी	SHG नेतृत्व भूमिकाएँ	राठौर et al., 2022
स्वास्थ्य प्रथाएँ	मातृ/शिशु स्वास्थ्य में सुधार	महाराना, 2025
सांस्कृतिक समन्वय	परंपरा और आधुनिकता का संतुलन	श्रीवास्तव, 2020

## 2.4 महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि

अध्ययनों से पता चलता है कि शिक्षा और जीविका एक-दूसरे पर निर्भर हैं: शिक्षा आय के नए अवसर प्रदान करती है, जबकि आय से आगे की शिक्षा प्राप्त करने में मदद मिलती है (लेट, 2025; मिश्रा, 2019)। सरकारी योजनाएं सशक्तिकरण की संभावनाएं प्रदान करती हैं, लेकिन स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार बदलाव, सांस्कृतिक संवेदनशीलता और लगातार निगरानी जरूरी है (भारत सरकार, 2020; पटेल, 2025)।

## 3. सैद्धांतिक ढांचा

सैद्धांतिक ढांचा इस बात को समझने का आधार प्रदान करता है कि शिक्षा, जीविका और सामाजिक परिवर्तन किस प्रकार खड़िया आदिवासी महिलाओं को सशक्त बनाते हैं। यह सशक्तिकरण के सिद्धांत, मानव पूंजी सिद्धांत और क्षमता दृष्टिकोण को जोड़ता है, जिससे बदलाव के संरचनात्मक, सांस्कृतिक और आर्थिक पहलुओं का व्यापक दृष्टिकोण प्राप्त होता है।

### 3.1 सशक्तिकरण सिद्धांत

सशक्तिकरण का सिद्धांत व्यक्तियों की क्षमता बढ़ाने, संसाधनों पर नियंत्रण रखने और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं पर प्रभाव डालने पर जोर देता है (फ्रोएर, 2012; बर्न, 1994)। खड़िया महिलाओं के लिए सशक्तिकरण तीन रूपों में दिखाई देता है:

- व्यक्तिगत सशक्तिकरण: शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण के माध्यम से साक्षरता, ज्ञान और कौशल का विकास करना और आत्मविश्वास बढ़ाना (महांती, 2021; मिश्रा, 2023)।
- आर्थिक सशक्तिकरण: स्व-सहायता समूहों और कृषक उत्पादक संगठनों में भाग लेकर आय अर्जित करना, वित्त का प्रबंधन करना और परिवार या समुदाय के स्तर पर बातचीत करना (बंजारे & सिंह, 2025; राठौर et al., 2022)।
- सामाजिक सशक्तिकरण: नेतृत्व की भूमिकाओं, सामुदायिक कार्यों और घर के फैसलों में सक्रिय रूप से भाग लेना (सोरेन & दास, 2025; पटेल, 2025)।

### 3.2 मानव पूँजी सिद्धांत

मानव पूँजी सिद्धांत के अनुसार, शिक्षा, कौशल और स्वास्थ्य में निवेश करने से उत्पादकता और सामाजिक-आर्थिक परिणाम बेहतर होते हैं (Becker, 1964; बर्न, 1994)। खड़िया महिलाओं के लिए साक्षरता, अंकगणित और व्यावसायिक प्रशिक्षण रोजगार के अवसर बढ़ाते हैं और पीढ़ी दर पीढ़ी लाभ सुनिश्चित करते हैं (कुमार & शर्मा, 2023; महांती, 2021)।

#### तालिका 3.1: निवेश प्रकार और परिणाम

निवेश का प्रकार	परिणाम	संदर्भ
औपचारिक शिक्षा	साक्षरता और आलोचनात्मक सोच	मिश्रा, 2023; महांती, 2021
व्यावसायिक प्रशिक्षण	रोजगारयोग्यता और उद्यमिता	क्लिमचुक-कोचास्का et al., 2023; पट्टनायक, 2022
स्वास्थ्य एवं पोषण शिक्षा	मातृ और शिशु स्वास्थ्य में सुधार	महाराना, 2025
SHG भागीदारी	वित्तीय साक्षरता और सामूहिक सौदेबाजी	बंजारे & सिंह, 2025

### 3.3 क्षमता दृष्टिकोण

अमर्त्य सेन का सामर्थ्य नज़रिया स्वास्थ्य, तालीम, एजेंसी और सामाजिक भागीदारी जैसी मूल्यवान क्षमताओं की आज़ादी पर जोर देता है (सेन, 1999)। खड़िया महिलाओं के लिए ये क्षमताएं तालीम, विभिन्न रोज़गार, प्रशासन में हिस्सेदारी और सांस्कृतिक मूल्यों का तालमेल बिठाना शामिल हैं (लेट, 2025; मिश्रा, 2019)।

### 3.4 समेकित ढांचा

तीनों सिद्धांत का मिलाप सशक्तिकरण को एक क्रमिक चाल के तौर पर दर्शाता है: तालीम, व्यावसायिक प्रशिक्षण और SHG हिस्सेदारी कौशल विकास और आय सृजन को मुमकिन बनाती है, जो निर्णय-निर्माण, एजेंसी और सामाजिक भागीदारी को बढ़ावा देते हैं और आखिर में सशक्तिकरण और सामाजिक बदलाव को प्रेरित करते हैं।

## 4. समीक्षा सारांश

समीक्षा सारांश पीथौरा ब्लॉक, महासमुंद में खड़िया आदिवासी महिलाओं पर मौजूद साहित्य से तालीम, रोज़गार और सामाजिक बदलाव की आपस में जुड़ी गहरी बातों को इकट्ठा करता है। नतीजे इन आयामों के बीच रिश्तों को ज़ाहिर करते हैं और टिकाऊ सशक्तिकरण के लिए उपायों को सूचित करते हैं।

#### 4.1 शिक्षा, आजीविका और सामाजिक परिवर्तन का समेकन

शिक्षा खड़िया महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए उत्प्रेरक के रूप में काम करती है, जिससे साक्षरता, आलोचनात्मक सोच, सेहत के बारे में जागरूकता में सुधार होता है और SHG, व्यावसायिक प्रोग्राम और उद्यमिता पहल में हिस्सेदारी मुमकिन होती है (महांती, 2021; मिश्रा, 2023; पट्टनायक, 2022)। यह महिलाओं की घरेलू और सामुदायिक निर्णय-निर्माण काबिलियत को भी मज़बूत करती है, जिससे संकुचित लिंग मूल्यों को चुनौती मिलती है (सोरेन & दास, 2025)।

रोज़गार एनेबलर के तौर पर काम करता है, क्योंकि आय-उत्पादन गतिविधियाँ माली आज़ादी, सामाजिक गतिशीलता बढ़ाती हैं और आत्मविश्वास को बढ़ावा देती हैं। विभिन्न रोज़गार माली असुरक्षा को कम करते हैं और तालीम में लगातार शिरकत को बढ़ावा देते हैं (बंजारे & सिंह, 2025; मिश्रा, 2019)।

सामूहिक तौर पर, तालीम और रोज़गार दोनों सामाजिक बदलाव को प्रेरित करते हैं, निर्णय-निर्माण, नेतृत्व और सामुदायिक पहचान को बढ़ाते हैं। हालाँकि, ये बदलाव धीरे-धीरे होता है और परिवार, समुदाय और नीतिगत ढांचे का समर्थन लाज़मी है (सिंह & कुमार, 2022; नाग, 2025)।

#### 4.2 अध्ययन में पैटर्न

- शिक्षा में लक्षित कार्यक्रमों के कारण महिला साक्षरता में धीरे-धीरे सुधार देखा गया है, हालांकि नामांकन राज्य औसत से नीचे है (यादव, 2010; मिश्रा, 2023)।
- मातृभाषा में तालीम समझ और याद रखने के लिए अहम है (महांती, 2021; लोपा, 2024)।
- NEP 2020 पहलें और महतारी वंदन योजना पहुँच और बनाए रखने में सुधार करती हैं, हालाँकि कार्यान्वयन में कमी मौजूद है (भारत सरकार, 2020; पटेल, 2025)।
- रोज़गार के अध्ययनों से पता चलता है कि कृषि, वन-उत्पाद संग्रह और दस्तकारी जैसे पारंपरिक कामकाज अभी भी प्रचलित हैं, लेकिन SHG, FPO और व्यावसायिक प्रशिक्षण आय, कौशल विविधीकरण और बाजार पहुंच में सुधार लाते हैं (बंजारे & सिंह, 2025; क्लिमचुक-कोचान्स्का et al., 2023)।
- साक्षर महिलाएं इन गतिविधियों में ज़्यादा सक्रिय होती हैं, जिससे माली स्थिरता तय होती है (लेट, 2025)।
- सामाजिक बदलाव निर्णय-निर्माण, नेतृत्व, स्वास्थ्य जागरूकता और सांस्कृतिक मूल्यों के तालमेल के ज़रिए दिखाई देता है (डैश, 2020; महाराना, 2025; श्रीवास्तव, 2020)।

#### 4.3 क्षेत्रों के बीच तुलनात्मक विश्लेषण

क्षेत्र/अध्ययन	फोकस	मुख्य निष्कर्ष	पीथौरा के लिए निहितार्थ
ओडिशा (क्लिमचुक-कोचान्स्का et al., 2023)	FPO आधारित आजीविका	SHG और FPO भागीदारी आय और सशक्तिकरण बढ़ाती है	स्थानीय मॉडल को अपनाएँ
झारखंड (खड़िया, 2020)	आदिवासी शिक्षा और कल्याण	प्राथमिक शिक्षा पहुँच में सुधार, उच्च शिक्षा सीमित	माध्यमिक और व्यावसायिक शिक्षा पर ध्यान दें
बस्तर, छत्तीसगढ़ (डैश, 2020)	सामाजिक परिवर्तन	शिक्षा और SHG निर्णय-निर्माण बढ़ाते हैं	शिक्षा-आजीविका एकीकृत दृष्टिकोण का समर्थन करता है
महासमुंद (पटेल, 2025)	नीति हस्तक्षेप	महतारी वंदन प्रतिधारण और सशक्तिकरण बढ़ाता है	ब्लॉक-स्तरीय अनुकूलन सततता के लिए आवश्यक

#### 4.4 उभरते हुए विषय और अवसर

- सशक्तिकरण एक बहुआयामी अवधारणा है और यह शिक्षा, रोज़गार और सामाजिक बदलाव के आपसी संबंधों पर निर्भर करता है।
- सांस्कृतिक रूप से विचारशील दखल, धीरे-धीरे सामाजिक बदलाव और एनईपी 2020 (NEP 2020) और स्थानीय योजनाओं के ज़रिए नीतिगत समर्थन महत्वपूर्ण हैं।
- उच्चतर माध्यमिक नामांकन, व्यावसायिक हुनर, बाज़ार तक पहुँच और पितृसत्तात्मक रुकावटों को दूर करने में कमियाँ मौजूद हैं।
- समुदाय-आधारित, एकीकृत कार्यक्रमों में मौके हैं, जो शिक्षा, कौशल विकास, एसएचजी (SHG) भागीदारी और स्थानीय नीति क्रियान्वयन को जोड़ते हैं।

#### 5. साहित्य में अंतराल

समीक्षा से पता चलता है कि पीथौरा ब्लॉक, महासमुंद में खड़िया महिलाओं की शिक्षा, आजीविका और सामाजिक परिवर्तन पर सीमित स्थानीय शोध उपलब्ध हैं।

##### 5.1 अनुसंधान अंतराल

- ज़्यादातर अध्ययन व्यापक आदिवासी क्षेत्रों पर केंद्रित हैं, ब्लॉक-विशिष्ट सामाजिक, शैक्षिक और आर्थिक भिन्नता पर कम ध्यान दिया गया है (सोरेन और दास, 2025; मिश्रा, 2019)।
- उच्चतर माध्यमिक और व्यावसायिक शिक्षा, कौशल प्रशिक्षण और लंबे समय के प्रभावों पर सीमित अध्ययन हैं (क्लिमचुक-कोचान्स्का एट अल., 2023; पटनायक, 2022)।
- लिंग, जाति, जनजाति और वर्ग के अंतर्संबंध पर कम ध्यान दिया गया है, जिससे पीढ़ीगत और पारिवारिक असमानताओं को समझने में कमी आती है (वर्मा, 2024; नाग, 2025)।
- मानसिक स्वास्थ्य और पर्यावरणीय जोखिमों का अध्ययन कम ही देखने को मिलता है (महाराणा, 2025; माराबी एट अल., 2025)।

##### 5.2 नीति अंतराल

- एनईपी 2020 (NEP 2020), महतारी वंदन और एसएचजी (SHG) योजनाओं में ब्लॉक-स्तर पर कार्यान्वयन में दिक्कतें हैं, जैसे कि शिक्षकों की कमी और सांस्कृतिक रूप से असंवेदनशील पाठ्यक्रम (भारत सरकार, 2020; महंती, 2021; पटेल, 2025)।
- लिंग के प्रति संवेदनशील दखल, कम उम्र में विवाह, और घरेलू शक्ति के संतुलन को सुधारने में कमी है (सक्सेना, 2023; राठौर एट अल., 2022)।

##### 5.3 पद्धति और सैद्धांतिक अंतराल

- ज़्यादातर अध्ययन मात्रात्मक सर्वेक्षण पर आधारित हैं, जिससे अनुभवों और दृष्टिकोणों की बारीकियों को समझने में कमी आती है (छत्तीसगढ़ ट्राइबल रिसर्च एंड ट्रेनिंग इंस्टिट्यूट, 2021)।
- भागीदारीपूर्ण और मिश्रित-प्रकार के अध्ययन सीमित हैं (डैश, 2020; मिश्रा, 2019)।
- सैद्धांतिक रूप से, सशक्तिकरण, मानव पूंजी और क्षमता दृष्टिकोण का स्थानीय संदर्भ में कम उपयोग होता है (फ़ोएरर, 2012; बर्न, 1994)।

## 5.4 साहित्य अंतराल सारांश

अंतराल का प्रकार	विवरण	भविष्य के अनुसंधान के लिए निहितार्थ
अनुसंधान	सीमित स्थानीय अध्ययन, उच्च शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण, दीर्घकालिक विश्लेषण	ब्लॉक-विशिष्ट, दीर्घकालिक और हस्तक्षेप आधारित अध्ययन करें
नीति	कार्यान्वयन अंतराल, "एक आकार-सभी के लिए" दृष्टिकोण, लिंग-संवेदनशीलता की कमी	सांस्कृतिक रूप से अनुकूल, लिंग-संवेदनशील नीतियाँ तैयार करें
पद्धति	मुख्य रूप से मात्रात्मक, सीमित भागीदारी/मिश्रित पद्धति	मिश्रित-प्रकार और भागीदारी अनुसंधान अपनाएँ
सैद्धांतिक	सैद्धांतिक एकीकरण की कमी, स्थानीय अनुकूलन का अभाव	सशक्तिकरण, क्षमता और मानव पूँजी सिद्धांतों का स्थानीयकरण करें

## 5.5 भविष्य के अनुसंधान के अवसर

- पीथौरा में स्थानीय अध्ययन
- उच्चतर माध्यमिक और व्यावसायिक शिक्षा
- अंतरसंयोजक और दीर्घकालिक दृष्टिकोण
- स्वास्थ्य और पर्यावरणीय जोखिमों का समावेश
- भागीदारी और मिश्रित पद्धति का उपयोग
- ब्लॉक-स्तरीय नीति मूल्यांकन

## 6. नीति एवं व्यावहारिक सुझाव

- शिक्षा नीतियों को मजबूत करना: प्रारंभिक बाल्यकाल कार्यक्रम, आंगनवाड़ी केंद्र, मातृभाषा आधारित संसाधनों का विस्तार (महांती, 2021; मिश्रा, 2023)।
- आजीविका सशक्तिकरण: कृषि के अलावा handicrafts, agro-processing और लघु उद्यमों को बढ़ावा। SHG और FPO के माध्यम से वित्तीय साक्षरता और बाजार तक पहुँच (बंजारे & सिंह, 2025; राठौर et al., 2022)।
- सामाजिक परिवर्तन और लिंग समानता: पंचायत भागीदारी, मेंटरशिप, प्रारंभिक विवाह और घरेलू काम पर जागरूकता कार्यक्रम (डैश, 2020; वर्मा, 2024)।
- स्वास्थ्य और कल्याण: स्वास्थ्य साक्षरता, मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य कार्यक्रम, मानसिक स्वास्थ्य समर्थन (महाराना, 2025)।
- नीति एकीकरण और निगरानी: शिक्षा, आजीविका, स्वास्थ्य और सामाजिक सशक्तिकरण को जोड़ने वाले बहु-क्षेत्रीय कार्यक्रम; समुदाय आधारित निगरानी (सोरेन & दास, 2025; डैश, 2020)।
- क्षमता निर्माण: स्थानीय हितधारकों, सरकारी एजेंसियों, NGOs और शैक्षणिक संस्थानों की भागीदारी (सस्टेनेबल, सहभागी सशक्तिकरण)।

## तालिका 6.1: नीति और व्यावहारिक सुझाव

क्षेत्र	सुझाव	अपेक्षित परिणाम
शिक्षा	पहुँच बढ़ाएँ, मातृभाषा शिक्षा, व्यावसायिक कार्यक्रम	साक्षरता, कौशल और प्रतिधारण में सुधार
आजीविका	SHG, FPO, माइक्रोक्रेडिट, सतत प्रथाएँ	आर्थिक स्वतंत्रता, आय विविधीकरण
सामाजिक परिवर्तन	नेतृत्व कार्यक्रम, लिंग-संवेदनशीलता	एजेंसी, निर्णय क्षमता, सामाजिक मान्यता
स्वास्थ्य	स्वास्थ्य साक्षरता, मातृ-शिशु स्वास्थ्य, मानसिक समर्थन	स्वास्थ्य, पोषण और कल्याण में सुधार
नीति एकीकरण	बहु-क्षेत्रीय, संदर्भ-विशिष्ट कार्यक्रम, M&E	प्रभावी, स्केलेबल, सांस्कृतिक रूप से अनुकूल
क्षमता निर्माण	समुदाय भागीदारी, साझेदारी	सतत और सहभागी सशक्तिकरण

## 7. निष्कर्ष (Conclusion)

यह समीक्षा, महासमुंद के पीथौरा ब्लॉक में खड़िया समुदाय की महिलाओं की शिक्षा, जीवन यापन के साधनों और सामाजिक बदलाव का एक विस्तृत जायजा पेश करती है।

- शिक्षा, सशक्तिकरण का आधार है; पढ़ना-लिखना, स्कूलों में नामांकन और कौशल विकास, ज्ञान, आत्मविश्वास और पहल करने की क्षमता को बढ़ावा देते हैं। उच्चतर माध्यमिक, उच्च शिक्षा और व्यवसायिक प्रशिक्षण के अवसर सीमित हैं। मातृभाषा में शिक्षा ग्रहण करने से सीखने और उसे बनाए रखने में मदद मिलती है।
- जीवन यापन के साधन, आर्थिक सशक्तिकरण में अहम भूमिका निभाते हैं। स्वयं सहायता समूह (SHG), किसान उत्पादक संगठन (FPO), माइक्रो क्रेडिट और छोटे व्यवसाय, महिलाओं को आय, कौशल और आर्थिक आत्मनिर्भरता प्रदान करते हैं।
- सामाजिक परिवर्तन धीरे-धीरे होता है। शिक्षा और जीवन यापन के साधन, निर्णय लेने की क्षमता, नेतृत्व और सामाजिक सम्मान को बढ़ाते हैं, स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता में सुधार लाते हैं और सांस्कृतिक मूल्यों को संतुलित करते हैं।

सशक्तिकरण एक बहुआयामी प्रक्रिया है, जिसमें मानव पूंजी का विकास, आर्थिक भागीदारी और सामाजिक सक्रियता शामिल है।

## सुझाव:

- शिक्षा, जीवन यापन, स्वास्थ्य और सामाजिक कार्यक्रमों को सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील और सहभागितापूर्ण तरीके से जोड़ना चाहिए।
- सामुदायिक भागीदारी, विभिन्न हितधारकों का सहयोग और मजबूत निगरानी-समीक्षा जरूरी है।
- भविष्य में किए जाने वाले प्रयासों में स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार, दीर्घकालिक और समावेशी दृष्टिकोण अपनाना चाहिए।

संक्षेप में, शिक्षा, विभिन्न प्रकार के जीवन यापन के साधनों और सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील हस्तक्षेपों के माध्यम से खड़िया समुदाय की महिलाओं का सशक्तिकरण, सतत सामाजिक परिवर्तन, लैंगिक समानता और व्यापक आदिवासी विकास को बढ़ावा दे सकता है। यह नज़रिया, व्यक्तिगत क्षमता को मजबूत करने के साथ-साथ पूरे समुदाय की भलाई में योगदान करता है और समान परिस्थितियों में आदिवासी महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए एक उदाहरण पेश करता है।

## 8. संदर्भ ग्रंथ सूची

- कुमार, अरुण. (2002). *खड़िया जनजाति की महिलाओं की शिक्षा और सामाजिक स्थिति*. रांची: प्रभात पब्लिकेशन.
- पंडा, उत्तम कुमार और अर्चना आर. तुपट (2023). सोशल नेटवर्किंग और सांस्कृतिक प्रभाव: भारतीय विश्वविद्यालय के छात्रों से मिली जानकारी। एजुकेशनल एडमिनिस्ट्रेशन: थ्योरी एंड प्रैक्टिस, 29(4), 3955–3959. (ISSN:1300-4832 E-ISSN:2148-2403). DOI: <https://doi.org/10.53555/kuey.v29i4.8715>. (स्कोपस इंडेक्स और UGC ग्रुप-II)
- तुपट, ए. आर. और पंडा, उत्तम कुमार (2021). अंडरग्रेजुएट लॉ स्टूडेंट्स पर सोशल मीडिया का फायदेमंद और नुकसानदायक प्रभाव। इनोवेशन, वॉल्यूम 64, नंबर 4, पेज 799-809, ISSN: 12674982 (P), 19650256 (E)। (स्कोपस इंडेक्स और UGC ग्रुप-II)
- पंडा, उत्तम कुमार (2019). निर्णय लेने में लैंगिक भूमिका और महिलाओं की स्थिति की गतिशीलता: भारत के दो कामकाजी परिवारों का एक अध्ययन। अजंता, वॉल्यूम 8, नंबर 1, पृष्ठ 94-100, ISSN: 2277-5730 (UGC स्वीकृत सूची जर्नल नंबर 40776)।
- पंडा, उत्तम कुमार (2018). दो कामकाजी परिवार, कार्यस्थल और तनाव के कारक: एक अनुभवजन्य दृष्टिकोण। अजंता, वॉल्यूम 7, नंबर 4, पृष्ठ 109-114, ISSN: 2277-5730 (UGC स्वीकृत सूची जर्नल नंबर 40776)।
- कुमार, एस., एवं शर्मा, आर. (2023). *Evaluating NEP 2020 impact on Kharia tribe's education*. *Education Review*, 6(3), 102–108.
- पंडा, उत्तम कुमार, इंडियन जेंडर रोल्स इन ट्रांज़िशन: बिटवीन द स्ट्रक्चर्स (2017). अजंता, वॉल्यूम 6, नंबर 3, पेज 143-149, ISSN: 2277-5730 (UGC अप्रूव्ड लिस्ट जर्नल नंबर 40776).
- केरकेट्टा, रोज. (2013). *खड़िया लोक कथाओं का साहित्यिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन*. रांची: प्यारा केरकेट्टा फाउंडेशन.
- क्लिमचुक-कोचान्स्का, एम., ओगुजीउबा, के., नवीन, एस., कुमार, जे., एवं पांडा, आई. (2023). उद्यमिता के माध्यम से जनजातीय महिलाओं का सशक्तिकरण: ओडिशा के मयूरभंज जिले से साक्ष्य. *Frontiers in Sociology*, 8. <https://doi.org/10.3389/fsoc.2023.1158770>
- पंडा, उत्तम कुमार, (2010) “वर्किंग कपल्स एंड चेंजिंग डोमेस्टिक रोल्स: व्हाई एंड हाउ दीज़ कॉन्सिक्सेंस??” रिसर्च लिंक, वॉल्यूम-IX (4), पेज 58-60 ISSN-0973-1628 (UGC अप्रूव्ड लिस्ट जर्नल नंबर 48985).
- खड़िया, बेसिल. (2020). *Tribal welfare research institute*. झारखंड.
- खान, टी., अहमद, के., नाहवी, आई., रजाब, एम., क़यूम, एस., एवं कमाल, एम. (2024). गांदरबल जिले में जनजातीय महिलाओं के लिए शैक्षिक बहिष्करण एवं सामाजिक-सांस्कृतिक बाधाएँ. *Women's Studies International Forum*. <https://doi.org/10.1016/j.wsif.2024.102970>
- दास, एस. के. और पंडा, उत्तम कुमार (2004), “वैश्वीकरण का युग और भारत में शिक्षा” थर्ड कॉन्सेप्ट: एन इंटरनेशनल जर्नल ऑफ आइडियाज़ में, वॉल्यूम 18, नंबर 208, ISSN 0970-7247, पृष्ठ 49-52 (UGC अप्रूव्ड लिस्ट जर्नल नंबर 48883 और UGC CARE लिस्ट सीरियल नंबर 46)।
- गुप्ता, एस., एवं राठौर, एच. (2020). स्वयं सहायता समूह हस्तक्षेप के माध्यम से सामाजिक-आर्थिक एवं राजनीतिक सशक्तिकरण: छत्तीसगढ़ के बिलासपुर से एक अध्ययन. *Journal of Public Affairs*. <https://doi.org/10.1002/pa.2143>
- छत्तीसगढ़ ट्राइबल रिसर्च एंड ट्रेनिंग इंस्टिट्यूट. (2021). *Tribal information of Chhattisgarh*. रायपुर.
- टेटे, वंदना. (2015). *आदिवासी साहित्य: परंपरा और आधुनिकता*. नई दिल्ली: रामकमल प्रकाशन.

- ठाकुर, लक्ष्मीनारायण. (2015). *Tribal women in Chhattisgarh: Issues and challenges*. रायगढ़: छत्तीसगढ़ ट्राइबल रिसर्च पब्लिकेशन.
- डैश, बी. (2020). खड़िया जनजातियों का सामाजिक-सांस्कृतिक रूपांतरण. *International Journal of Research*, 7, 320–325.
- तिवारी, चंद्रमणि प्रसाद. (2023). *जनजातीय पर्यावरण* (पृ. 35–36). आगरा: आशा पब्लिकेशन.
- दुबे, जे., गौरहा, ए., पाठक, एच., एवं जोशी, एस. (2025). महिला स्वयं सहायता समूहों द्वारा उत्पादित वस्तुओं के विपणन प्रतिरूप: छत्तीसगढ़ के महासमुंद जिले का एक अध्ययन. *International Journal of Advanced Biochemistry Research*. <https://doi.org/10.33545/26174693.2025.v9.i8st.5387>
- देवांगन, एस., साहू, के., आचारी, के., एवं सोनी, एस. (2011). रेशमकीट पालन के माध्यम से जनजातीय महिलाओं का सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण: छत्तीसगढ़ के रायगढ़ जिले के लैलूंगा विकासखण्ड का अध्ययन. *International Journal of Biometrics*, 6, 297. <https://doi.org/10.5539/ijbm.v6n12p297>
- देवांगन, पी., विनायगम, एस., एवं श्रीवास्तव, के. (2019). छत्तीसगढ़ के रायपुर जिले में महिला समूहों के सदस्यों का सामाजिक-आर्थिक प्रोफाइल. *Journal of Extension Education*. <https://doi.org/10.26725/jee.2019.2.31.6300-6304>
- ध्रुव, बी., कौशल, आर., भगत, आर., एवं अत्री, एन. (2020). छत्तीसगढ़ के गरियाबंद जिले में कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों में जनजातीय महिलाओं की भागीदारी. *International Journal of Research*, 8, 334–344. <https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v8.i9.2020.1225>
- नाग, डी. (2025). छोटानागपुर क्षेत्र में जनजातीय महिलाओं की स्थिति: जीवन, आजीविका एवं भूमि स्वामित्व का विश्लेषणात्मक अध्ययन. *Journal of Land and Rural Studies*, 13, 148–162. <https://doi.org/10.1177/23210249251328828>
- नाशिने, आर., भारद्वाज, एन., एवं एसाक्किमुथु, एम. (2015). जनजातीय महिलाओं के सशक्तिकरण पर कृषि विज्ञान केंद्र का प्रभाव: छत्तीसगढ़ के बस्तर जिले का अध्ययन. *International Journal of Home Science Extension & Communication Management*, 2, 22–27. <https://doi.org/10.15740/has/ijhsecm/2.1/22-27>
- पटेल, आर. (2025). महासमुंद जिले के ग्राम कलेंडा की महिलाओं पर 'महतारी वंदन योजना' का प्रभाव. *International Journal for Multidisciplinary Research*. <https://doi.org/10.36948/ijfmr.2025.v07i02.39594>
- पट्टनायक, डी. के. (2022). *Economic empowerment of tribal women in Chhattisgarh*. रायपुर: छत्तीसगढ़ ट्राइबल रिसर्च पब्लिकेशन.
- पाणिग्राही, एस. (2017). छत्तीसगढ़ में जनजातीय महिलाओं का सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण: बस्तर जिले का एक अध्ययन. *Abhinav-National Monthly Refereed Journal of Research in Arts & Education*, 6, 8–12.
- पाणिग्राही, एस. (2017). दक्षिणी छत्तीसगढ़ में जनजातीय महिला सशक्तिकरण. *Abhinav-National Monthly Refereed Journal of Research in Arts & Education*, 6, 35–39.
- प्रधान, अशोक. (2001). भारत में जनजाति विकास के पाँच दशक. *योजना*, 44(12), 3–6.
- प्रसाद, शशिभूषण. (2020). खड़िया जनजाति के युवाओं की उच्च शिक्षा की प्रवृत्तियाँ.
- फ़ोएरर, पी. (2012). अधिगम, आजीविका और सामाजिक गतिशीलता: मध्य भारत में बालिकाओं की शिक्षा का महत्व. *Anthropology & Education Quarterly*, 43, 344–357. <https://doi.org/10.1111/j.1548-1492.2012.01189.x>
- बंजारे, एन., एवं सिंह, पी. (2025). छत्तीसगढ़ में महिलाओं की वार्षिक आय के स्रोतों को आकार देने में स्वयं सहायता समूहों की भूमिका. *International Journal of Humanities and Social Science Invention*. <https://doi.org/10.35629/7722-1405172180>

- बंजारे, एन., एवं सिंह, पी. (2025). छत्तीसगढ़ में स्वयं सहायता समूहों की महिला लाभार्थियों की व्यावसायिक स्थिति: सशक्तिकरण एवं आर्थिक सहभागिता का अध्ययन. *International Journal for Multidisciplinary Research*. <https://doi.org/10.36948/ijfmr.2025.v07i03.45893>
- बर्न, बी. के. राय. (1994). *Tribal transformation in India*. JETIR, 6.
- भारत सरकार. (2011). *Tribal census of India* (पृ. 29–36).
- भारत सरकार. (2020). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: जनजातीय शिक्षा के सुधार एवं बढ़ावा*. नई दिल्ली: मानव संसाधन विकास मंत्रालय.
- मराबी, आर., चौधरी, वी., श्राय, आर., एवं डी. (2025). जलवायु परिवर्तन के प्रति आजीविका की तुलनात्मक संवेदनशीलता: छत्तीसगढ़ के सूरजपुर जिले में जनजातीय एवं गैर-जनजातीय किसान. *International Journal of Agriculture Extension and Social Development*. <https://doi.org/10.33545/26180723.2025.v8.i10d.2544>
- महाराना, आर. (2025). ओडिशा के मयूरभंज जिले में पहाड़ी खड़िया समुदाय में मातृ स्वास्थ्य एवं बाल-पालन प्रथाएँ. *EPRA International Journal of Multidisciplinary Research (IJMR)*. <https://doi.org/10.36713/epra21364>
- महंती, एस. (2021). *The role of mother tongue in tribal education*. *Journal of Indigenous Education*, 8(1), 75–89.
- मिश्रा, एस. सी. (2019). *मध्य भारत की जनजातीय महिलाओं की आजीविका के विविध रूपों का अध्ययन*. अंबिकापुर: सरगुजा विश्वविद्यालय प्रकाशन विभाग.
- मिश्रा, पूजा. (2023). *Impact of tribal women participation in educational programmes*. *Ignified Minds Journal*, 20, 126–131.
- मैथ्यू, जी., एवं कासी, ई. (2021). संवेदनशील लोगों की आजीविका: छत्तीसगढ़ के बिरहोर समुदाय पर एक नृवंशविज्ञानात्मक अध्ययन. *Asia-Pacific Journal of Rural Development*, 31, 127–142. <https://doi.org/10.1177/10185291211007924>
- मोहापात्रा, आर. (2021). पूर्वी भारत के ओडिशा राज्य के मयूरभंज जिले के पहाड़ी खड़िया समुदाय की शैक्षिक स्थिति: एक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण. *PalArch's Journal of Archaeology of Egypt / Egyptology*, 58, 2915–2927. <https://doi.org/10.17762/pae.v58i1.1189>
- यादव, रामनिवास. (2010). खड़िया जनजाति में शिक्षा का प्रभाव. राष्ट्रीय संगोष्ठी, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय, वर्धा.
- राठौर, वी., तिवारी, पी., पांडेय, पी., सिंह, के., एवं सिंह, डी. (2022). छत्तीसगढ़ के बस्तर जिले में एफपीओ के माध्यम से जनजातीय महिलाओं का सामाजिक-आर्थिक उत्थान. *Indian Journal of Extension Education*. <https://doi.org/10.48165/ijee.2022.58429>
- राव, पी. एन. (2020). शिक्षा के माध्यम से खड़िया महिलाओं के जीवन और रोजगार में बदलाव. रायपुर: छत्तीसगढ़ समाजशास्त्र परिषद.
- रेलवानी, एन., एवं नामदेव, के. (2025). मुंगेली जिले के अचानकमार-अमरकंटक बायोस्फीयर रिज़र्व में स्थानीय जनजातियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का मूल्यांकन. *Asian Journal of Agricultural Extension, Economics & Sociology*. <https://doi.org/10.9734/ajaees/2025/v43i42715>
- लेट, एस. (2025). भारत में जनजातीय महिलाओं के बीच आजीविका विविधीकरण की खोज: सशक्तिकरण की दिशा में एक मार्ग. *International Journal of Latest Technology in Engineering Management & Applied Science*. <https://doi.org/10.51583/ijltemas.2025.1408000203>
- लोपा, मीना. (2024). *A handbook of tribes of Santhal Pargana*. रांची: S.K. Publishing Company.

- वर्मा, ममता रानी. (2024). आदिवासी महिला सशक्तिकरण: एक सामाजिक विश्लेषण. *Journal of Human Resources*, 4(8), 78–81.
- शुक्ला, राकेश कुमार. (2014). *खड़िया जनजाति की जीवन संस्कृति, परंपराएँ एवं सामाजिक ढाँचा*.
- श्रीवास्तव, महेश. (2020). *छत्तीसगढ़ की कमजोर एवं आदिम जनजातियों की सांस्कृतिक और सामाजिक स्थिति*. रायपुर: छत्तीसगढ़ ट्राइबल रिसर्च पब्लिकेशन.
- सक्सेना, पी. (2023). सामाजिक-आर्थिक कारक और ग्रामीण लड़कियों की शिक्षा पर उनका प्रभाव. *Journal of Education Policy Studies*, 19(4), 56–69.
- साहू, सुनील कुमार. (2020). खड़िया महिलाओं की स्थिति, रोजगार और सरकारी योजनाओं के प्रभाव का अध्ययन.
- सिंह, आर. सी. (2003). *Cultural and educational dynamics of Kharia women*.
- सिंह, एस., एवं कुमार, पी. (2022). परिवार और समुदाय का समर्थन ग्रामीण भारत में छात्राओं की शैक्षणिक सफलता पर प्रभाव. *Social Support and Education Journal*, 21(3), 99–111.
- सोनी, ए., एवं सोनी, आर. (2023). छत्तीसगढ़ के अगरिया समुदाय में औपचारिक शिक्षा के माध्यम से जनजातीय विकास. *Indian Journal of Research in Anthropology*. <https://doi.org/10.21088/ijra.2454.9118.9223.4>
- सोरेन, सी., एवं दास, बी. (2025). आत्मनिर्भर शिक्षा के संदर्भ में जनजातीय महिलाओं का रूपांतरण एवं सशक्तिकरण. *International Journal for Multidisciplinary Research*. <https://doi.org/10.36948/ijfmr.2025.v07i04.50594>